दैनिक
नया तेवर, नया कलेवर
यशोभूमि
मुंबई शुक्रवार, 4 सितंबर 2026

अपने भीतर झांककर आंतरिक शक्ति को पहचानें: राजयोगी निकुंज

राजयोगी की पुस्तक 'इकोज ऑफ द सोल' का विमोचन संपन्न

नलिनी दीदी की कला प्रदर्शनी 'आरंभ' का हुआ आयोजन

यशोभूमि/ प्रतिनिधि

मुंबई। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम बाहरी दुनिया से तो पूरी तरह जुड़े हैं, लेकिन अक्सर अपने अंतर्मन से कट जाते हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम थोड़ा ठहरें, अपने भीतर झांकें और उस शांति, स्पष्टता व आंतरिक शक्ति को पुनः खोजें जो पहले से हमारे भीतर मौजूद है। यह विचार जाने-माने लेखक और वक्ता राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज जी ने व्यक्त किए। वह एमवीआईआरडीसी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (डब्ल्यूटीसी) मुंबई में अपनी दशकों की रचनाओं के संकलन पर आधारित पुस्तक 'इकोज ऑफ द सोल - रिफ्लेक्शंस फॉर ए कॉन्शियस लाइफ' के विमोचन अवसर पर बोल रहे थे। यह समारोह राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदी (दीदी मां) की रचनात्मक यात्रा को समर्पित कला प्रदर्शनी 'आरंभ - इट्स नेवर टू लेट इन लाइफ' के साथ आयोजित किया गया था।



साधना का निचोड़ है यह पुस्तक

एमवीआईआरडीसी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर मुंबई के चेयरमैन और एआईएआई के अध्यक्ष डॉ. विजय कलंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज का संदेश सदैव विचारों और कार्यों में विनम्र रहने का रहा है। निकुंज जी की यह पुस्तक केवल विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि वर्षों के ज्ञान और साधना का निचोड़ है, जो हमें वह दृष्टि देती है जो औपचारिक शिक्षा से परे है। डब्ल्यूटीसी मुंबई की वरिष्ठ निदेशक (व्यापार निवेश व अंतरराष्ट्रीय संबंध) प्रिया पानसरे ने कहा कि जहां 'आरंभ' जीवन में किसी भी मोड़ पर सार्थक शुरुआत करने का संदेश देता है।

राजयोगी निकुंज ने कहा कि वास्तविक प्रगति केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं मापी जाती, बल्कि हमारे विचारों की गुणवत्ता, रिश्तों और मानसिक स्थिति से तय होती है। तकनीक और भौतिक प्रगति ने हमारे रहन-सहन को बदला है, लेकिन आंतरिक कल्याण उतना ही महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शाकू दीदी ने कहा कि 'आरंभ' यह प्रेरणादायी संदेश देता है कि नई शुरुआत करने के लिए कभी देर नहीं होती। दीदी मां की कला यात्रा दर्शाती है कि जब उत्साह और दृढ़ संकल्प हो तो उम्र कोई बाधा नहीं बनती। कला और आध्यात्मिकता मिलकर जीवन में शांति, खुशी और उद्देश्य ला सकते हैं।